

गोवदि दामोदर माधवेतिसितोत्र  
अग्रे कुरूनाम् अथ पाण्डवानां दुःशासनेनाहृत वस्त्रकेशा ।  
कृष्णा तदाकरोशदनन्यनाथ गोवदि दामोदर माधवेति ॥

जसि समय कौरव और पाण्डवों के सामने भरी सभामें दुःशासन ने द्रौपदी के वस्त्र और बालोंको पकडकर खींचा, उस समय जसिका कोई दूसरा नाथ नहीं ऐसी द्रौपदी ने रोकर पुकारा— 'हे गोवन्दि! हे दामोदर! हे माधव!' ॥ १ ॥  
श्रीकृष्ण वषिणो मधुकैटभारे भक्तानुकम्पन् भगवन् मुरारे ।  
त्रायस्व माम् केशव लोकनाथ गोवदि दामोदर माधवेति ॥

'हे श्रीकृष्ण! हे वषिणो! हे मधुकैटभ को मारनेवाले! हे भक्तों के ऊपर अनुकम्पा करनेवाले! हे भगवन्! हे मुरारे! हे केशव! हे लोकेश्वर! हे गोवन्दि! हे दामोदर! हे माधव! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो' ॥ २ ॥

वकिरेतुकाम अखलि गोपकन्या मुरारी पदारपति चतित्वृत्तयः ।  
दध्योदकं मोहवसादवोचद् गोवदि दामोदर माधवेति ॥

जनिकी चतित्वृत्तमुरारिके चरणकमलों मे लगी हुई है, वे सभी गोपकन्याएँ दूध-दही बेचने की इच्छा से घरसे चलीं । उनका मन तो मुरारिके पास था; अतः प्रेमवश सुध-बुध भूल जाने के कारण 'दही लो दही' इसके स्थानपर जोर-जोरसे 'गोवन्दि! दामोदर! माधव! आदि पुकारने लगीं ॥ ३ ॥

जगधोय दत्तो नवनीत पण्डिः गृहे यशोदा वचिकित्सियानि ।  
उवाच सत्यं वद हे मुरारे गोवदि दामोदर माधवेति ॥  
जहिवे रसागरे मधुरा प्रिया त्वं सत्यं हतिं त्वं परमं वदामि ।  
अवर्णयेत मधुराकषराणां गोवदि दामोदर माधवेति ॥  
गोवदि गोवदि हरे मुरारे गोवदि गोवदि मुकुन्द कृष्ण ।  
गोवदि गोवदि रथांगपाणे गोवदि दामोदर माधवेति ॥  
सुखावसाने त्वदिमेव सारं दुःखावसाने त्वदिमेव गेयम् ।  
देहावसाने त्वदिमेव जप्यं गोवदि दामोदर माधवेति ॥

सुख के अन्त में यही सार है, दुःख के अन्त में यही गाने योग्य है और शरीर का अन्त होने के समय भी यही मन्त्र जपने योग्य है, कौन-सा मन्त्र? यही कि 'हे गोवन्दि ! हे दामोदर ! हे माधव !' ॥

वक्तुं समर्थोपनिवक्तुकिश्चति अहो जनानां व्यसनाभमुख्यम् ।  
जहिवे पबिस्वमृतमेतदेव गोवदि दामोदर माधवेति ॥